लोकमत समाचार

व्याख्यान ● नीति आयोग के सदस्य डॉ रमेश चंद ने कहा, 'मौसमी बदलाव एवं कृषि व जल क्षेत्र पर होने वाला प्रभाव' पर अंतर्राष्ट्रीय चर्चा सत्र

मौसम का पूर्वानुमान लगाकर फसलों को नुकसान से बचाएं किसान

औरंगाबाद। 19 दिसंबर। लोस सेवा

बदलते मौसम का पूर्वानुमान लगाकर फसलों को होने वाले नुकसान की तीव्रता कम की जा सकती है. मौसमी बदलाव आम लोगों के जीवन से संबंधित हैं. इसके बारे में जनजागृति होना जरूरी है. यह विचार नीति आयोग के सदस्य डॉ रमेश चंद ने यहां व्यक्त किए.

राज्य के चार कृषि विश्वविद्यालय एवं औरंगाबाद की जल व भूमि प्रबंधन संस्था- वाल्मी के संयुक्त तत्वावधान में वाल्मी में हाल ही में आयोजित 'मौसमी बदलाव एवं इसके कृषि व जल क्षेत्र पर होने वाला प्रभाव' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय चर्चा सत्र में अपने विशेष व्याख्यान में डॉ रमेश चंद बोल रहे थे.

डॉ रमेश चंद ने कहा कि हानिकारक वायु का प्रसार कम करने और सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना, मौसम में कार्बन का संतुलन रखना जरूरी है. इसके चलते देश में हरित क्षेत्र बढ़ाने की जरूरत है. पौधारोपण पर जोर देकर पेड़ों की कटाई पर प्रतिबंध लगाना पड़ेगा. देश के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कार्यक्षमता के साथ होना चाहिए. विशेष रूप से देश में वर्षा के जल का उचित रूप से संवर्धन एवं उपयोग करने की जरूरत है. खेत में फसल के अवशेष जलाने से बड़े पैमाने पर मौसम पर असर हो रहा है. इसके बारे में किसानों को जागरुक करने की जरूरत है. किसानों का परंपरागत ज्ञान ही मौसमी बदलाव पर मात देने के लिए उपयोगी साबित हो सकता है. इस पर कृषि वैज्ञानिकों द्वारा गहराई से अध्ययन करने की जरूरत पर भी उन्होंने जोर दिया है.

औरंगाबाद में सोमवार को आयोजित 'मौसमी बदलाव एवं इसके कृषि व जल क्षेत्र पर होने वाला प्रभाव' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय चर्चा सत्र में अपनी बात रखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व महासंचालक डॉ आरएस परोड़ा.

प्रकृति की अनदेखी का खामियाजा भुगतना पड़ेगा- परोड़ा

अध्यक्षीय भाषण में पद्मभूषण डॉ आरएस परोड़ा ने कहा कि बढ़ती जनसंख्या से अनाज की जरूरत भी बढ़ गई है. औद्योगिक विकास भी मौसमी बदलाव से जुड़ा हुआ है इस पर अधिक अध्ययन की जरूरत है. औद्योगिक विकास पर अधिक जोर देते हुए प्रकृति के संतुलन की अनदेखी का खामियाजा सभी को भुगतना पड़ेगा. मौसमी बदलाव का राष्ट्रीय खाद्यान्न सुरक्षा पर बड़े पैमाने पर प्रभाव होगा. कृषि व जल क्षेत्र पर तो इसका विपरीत प्रभाव हो ही रहा है. बेमौसमी बारिश, बाढ़ की स्थिति, ओलावृष्टि, गर्मी तथा बारिश के खंड आदि बौसमी बदलाव का असर है. इसके चलते अल्प भूधारक किसानों के कृषि उत्पाद पर व जल की उपलब्धता पर असर हो रहा है. जल, जमीन, मौसम आदि प्राकृतिक संसाधनों के नुकसान के चलते कृषि उत्पाद में कमी आई है. फसलों पर कीट एवं रोगों का प्रकोप बढ़ रहा है. इससे तापमान बढ़ रहा है. इसके मद्देनजर फसलों की परिपक्वता पर असर होकर फसलों की अवधि कम हो रही है. देश में गेहूं, चावल, सूरजमुखी आदि फसल तापमान के लिए अधिक संवेदनशील है एवं इससे उत्पाद प्रभावित हो रहा है. मौसम के साथ अनुकूल कृषि तकनीक के विकास के लिए कृषि के शोध अध्ययन पर अधिक निवेश करने की जरूरत पर भी उन्होंने जोर दिया. इस अवसर पर ऑस्ट्रेलिया के कृषि वैज्ञानिक डॉ जॉन डिक्सन, इजिप्त के कृषि वैज्ञानिक डॉ अदेल बेलत्यागी व महिको के अध्यक्ष राजू बारवाले ने भी विचार व्यक्त किया.

इस अवसर पर नई दिल्ली के भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व महासंचालक पद्मभूषण डॉ आरएस परोड़ा, इजिप्त के कृषि विशेषज्ञ डॉ अदेल बेलत्यागी, ऑस्ट्रेलिया के कृषि वैज्ञानिक डॉ जॉन डिक्सन, वसंतराव नाइक मराठवाड़ा कृषि विवि के कुलपति डॉ बी व्यंकटेश्वरलू, महिको के अध्यक्ष राजू बारवाले, राहुरी स्थित महात्मा फुले कृषि विवि के कुलपति डॉ केपी विश्वनाथ, अकोला के डॉ पंजाबराव देशमुख कृषि विवि के कुलपति डॉ विलास भाले, पुणे स्थित कृषि परिषद के महासंचालक केएम नागरगोजे, वाल्मी के महासंचालक एचके गोसावी, संचालक संशोधक डॉ दत्तप्रसाद वासकर, डॉ सुनील गोरंटीवार, डॉ अविनाश गरुड़कर आदि उपस्थित थे.

चर्चासत्र का संयोजन डॉ दत्तप्रसाद वासकर, सहसंयोजन डॉ सुनील गोरंटीवार व डॉ अविनाश गरुड़कर ने तथा आयोजन सचिव डॉ भगवान आसेवार ने किया. मंच संचालन डॉ सुनील गोरंटीवार ने एवं संशोधन संचालक डॉ दत्तप्रसाद वासकर ने आभार प्रदर्शन किया.

'एग्रो क्लायमेटिक एटलास ऑफ महाराष्ट्र' का विमोचन

कृषि विवि के वैज्ञानिकों ने डॉ बी व्यंकटेश्वरलू के मार्गदर्शन में राज्य के 278 तहसीलों के गत 30 वर्षों के मौसम का अध्ययन करके बनाए गए एग्रो क्लायमेटिक एटलास ऑफ महाराष्ट्र का विमोचन किया. यह एटलास तहसील स्तर के फसलों के नियोजन एवं बुआई के लिए उपयोगी साबित होगा. इस अवसर पर मौसमी बदलाव पर आधारित उपकरण, सामग्री व विभिन्न पुस्तकें एवं कई कंपनियों के स्टॉल्स की प्रदर्शनी आयोजित की गई थी.